ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
IJAR 2015; 1(5): 271-273
www.allresearchjournal.com
Received: 18-03-2015
Accepted: 21-04-2015

डॉ. सन्तोष कुमार भारद्वाज
हिंदी विभाग, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

Correspondence:
डॉण सन्तोष कुमार भारद्वाज
हिंदी विभाग, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

'बाणभट्ट की आत्मकथा' के आधार पर द्विवेदी जी के उपन्यास कला का मूल्यांकन

डॉ. सन्तोष कुमार भारद्वाज

प्रस्तावना

"मध्यकालीन सामंतशाही, उसकी हीनता, उसके पाप, उसकी छांह में पलती हुई नागरिक सभ्यता की निर्वीयता, राजमहलों के अंधगझरों में बंदी, तपता हुआ नारीत्व, आश्रय पाता हुआ विनासी क्रूर समुदाय, मिथ्या, दर्प, ईर्ष्या, द्वेष तथा स्वार्थ पर ठहरा हुआ धर्म और पांडित्य तथा मानव–मूल्यों को गलत ढंग से आँकनेवाली पनपती हुई दृष्टियां, ये सभी 'आत्मकथा' के परिवेश में बड़ी जीवंतता से उभरे हैं। समाज की ये काली परछाइयां भेद–भावों पर आधारित मानव–सभ्यता, क्या आज भी नहीं हैं ?
– हिंदी उपन्यासः एक अन्तर्यात्रा, डॉ. रामदरश मिश्र, पृ.204

''आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी में कारयिती प्रतिभा के कारण ही उच्च कोटि की भावयित्री प्रतिभा भी है।'' [1] डॉ. हरदयाल के इस कथन की पूर्णतया स्थापना द्विवेदी जी के पहले उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' से हो जाती है। आगे की रचनाओं के सहारे यह कथन पुष्ट हो जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि द्विवेदी जी का यह उपन्यास (बाणभट्ट की आत्मकथा) अपने आप में निराला उपन्यास है। द्विवेदी जी ने इसमें कई ऐसे प्रयोग किए हैं जो की अद्भुत हैं। 'आत्मकथा' में स्वयं लेखक का कहना है कि यह 'साहित्य में अभिनव प्रयोग' है। इसके बावजूद इस उपन्यास को लेकर द्विवेदी जी की उपन्यास लेखन–कला पर कई आक्षेप लगाए जाते हैं। संभव है कि ये आक्षेप विवादग्रंस्त हों। खैर इसकी चर्चा तो हम आगे करेंगे। पहले उपन्यास के कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं पर दृष्टि डालें।

उपन्यास एक ऐतिहासिक व्यक्ति की जीवन–गाथा है, फिर भी उसकी प्रधान कथा काल्पनिक है। आत्मकथा शैली में लिखे जाने के बावजूद यह आत्मकथा का आभास मात्र दे पाता है। नामकरण की दृष्टि से आत्मकथा है, और शैली, जैसा कि द्विवेदी जी ने 'उपसंहार' में लिखा है 'डायरी शैली' है। पर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' द्विवेदी जी द्वारा लिखी गई है, अतः यह जीवनी है। उन विवादों से उबरकर इसे किसी ऐसी विधा के अंतर्गत ही रखा जा सकता है जो अपने लचीले शिल्प के अनुसार समय–समय पर अनेक सहयोगी विधाओं के गुणों को अपनाने की क्षमता रखती हो। यह क्षमता 'उपन्यास' विधा में देखने को मिलती है। उपन्यास विधा में ''वर्णन चित्रण की निश्चित परिपाटी नहीं और पात्रों और परिच्छेदों की संख्या का आकार–प्रकार पर किसी तरह की रोक–टोक नहीं है।'' [2] अतः 'बाणभट्ट की आत्मकथा' ऐतिहासिक उपन्यास के दायित्व को निबाहने में पूर्णतः समर्थ है।'' [3] इस उपन्यास को ''ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचा गया रोमांस कहा गया है।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' की ऐतिहासिकता की चर्चा करते हुए द्विवेदी जी ने लिखा है कि – ''इतिहास की दृष्टि से छोटी–मोटी असंगतियां चाहे निकल आएं पर अधिकांश में उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री से कथा की सामग्री का विरोध नहीं है।'' [4] उपन्यास में इसकी (ऐतिहासिकता) पड़ताल करने से कई बातें स्पष्ट होती हैं – उपन्यास में बाणभट्ट के अलावा, महाराजा हर्षवर्धन, कुमार कृष्णवर्धन, धावक, राज्यश्री, ग्रहवर्मा जैसे कुछ पात्र ही ऐतिहासिक हैं। निपुणिका, भट्टिनी, सुचरिता, विरतिवज्र, सुगतभद्र, अघोर भैरव, मदन श्री आदि कुछ पात्र काल्पनिक हैं। जबकि दो पात्र ऐसे हैं, जिनकी स्थिति विवादास्पद है – लोरिक देव, तुवर मिलिंद। पात्र की तरह ही घटनाएं भी वास्तविक और काल्पनिक दोनों प्रकार की हैं। स्थान तो सभी ऐतिहासिक हैं किंतु कार्य और घटनाएं कल्पित हैं। पर काल्पनिक घटनाएं भी उस युग के अनुरूप हैं। ऐतिहासिक तथ्यों को बड़ी कुशलता से संगुफित किया गया है। उपन्यास का नायक बाणभट्ट ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। वह राजा हर्षवर्धन का कवि था। द्विवेदी जी ने इससे उत्तमपुरुष शैली के हर्षवर्धन के समय की कथा कहलवाई है। पर सच्चा तो यह है कि ''उपन्यास को लिखने के लिए लेखक को स्वयं बाणभट्ट बनना पड़ा है। इसमें लेखक को बेजोड़ सफलता मिली है।'' [5] आचार्य द्विवेदी पुस्तक (उपन्यास) की सामग्री की ओर संकेत करते हुए 'कथामुख' में लिखते हैं कि – ''दो साल तक वह कथा यों ही पड़ी रही।

एक दिन मैंने सोचा कि बाणभट्ट के ग्रंथों से मिलाकर देखा जाए कि कथा कितनी प्रामाणिक है। कथा में ऐसी बहुत–सी बातें थीं जो उन पुस्तकों में नहीं हैं। इनके लिए मैंने समसामयिक पुस्तकों का आश्रय लिया और एक तरह से कथा को नए सिरे से संपादित किया।'' [6] स्पष्ट है कि उपन्यास में कल्पना और इतिहास का अपूर्व सम्मिरण है। द्विवेदी जी ने इतिहास से प्राप्त हर्षकालीन स्थूल आँकड़ों को आधार न बनाकर तत्कालीन साहित्य में चित्रित सत्यों को आधार बनाया है। इन्हीं बिखरे हुए सत्यों को गूँथकर लेखक ने बहुत सशक्त और सुंदर वातावरण तैयार किया है। इसी संदर्भ में बच्चन सिंह का मत है कि ''पूर्वकालीन उत्तरभारत का इससे ज्यादा प्रामाणिक इतिहास दूसरा नहीं है।'' [7]

''ऊपरी दृष्टि से देखने पर इस उपन्यास में आधुनिक चेतना नहीं दीखेगी। किंतु गहरी दृष्टि इस चेतना को खोल पाने में धोखा नहीं खा सकती।'' [8] कथावस्तु पर ध्यान केंद्रित करने से लक्षित होता है कि उपन्यास में आधुनिक चेतना और ऐतिहासिक कल्पना का खासा द्वन्द्व है। ऊपर–ऊपर तो कथा 'वर्धन वंश', 'मौखरि वंश', आदि से जुड़ी है पर गहराई से देखने पर कथा में तत्कालीन परिस्थितियों पर किए गए संकेतों की ओर ध्यान जाता है। अपने युग से प्रभावित होना साहित्यकार के लिए स्वाभाविक स्थिति है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में द्विवेदी जी ने मध्यकालीन इतिहास के साथ–साथ परोक्ष रूप में भारत के आधुनिक इतिहास की झाँकी प्रस्तुत की है। उपन्यासकार ने हर्षवर्धन, बाणभट्ट, राज्यश्री, सामंतवाद, बौद्ध और वैष्णव धर्म, स्थाणीश्वर और कान्यकुब्ज राज्य में व्याप्त विलासिता और पापाचार तथा पारस्परिक मतभेद का सजीव चित्र उपस्थित किया है वहीं परोक्ष रूप से अपने युग को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। ऐसे कई स्थल उपन्यास में हैं जहां ऐतिहासिकता या कल्पना से तत्कालीन परिस्थितियों की तारतम्यता बैठती है।

बाण का इतिहास हमें पहले बहुत कम प्राप्त होता है। थोड़ी जानकारी के आधार पर लोगों ने इसे लंपट मान लिया था; किंतु द्विवेदी जी ने इस पात्र पर प्राप्त सत्यों की रक्षा करते हुए नवीन रूप रेखाओं से ऐसा व्यक्तित्व प्रदान किया जो अपनी निराडम्बरता और मानवीयता से हर युग को प्रभावित कर सकता है। उपन्यास में कई ऐसे पात्र हैं जो काल्पनिक हैं पर वास्तविक प्रतीत होते हैं। ''भट्टिनी, कलपित पात्र है फिर भी उस काल की सजीव प्रतिमा है।'' [9]

उपन्यास का रचना काल द्वितीय विश्वयुद्ध और भारतीय स्वाधीनता के बीच का है। यह युद्धों के उत्कर्ष का काल था। इस स्थिति में ऐतिहासिकता के बावजूद लेखक अपने युग को छोड़ नहीं पाया है। कई ऐसे स्थल हैं जहां इस तरह के वर्णन है।यथा–परंतु दुर्धर काल में राज्य व्यवस्था में किसी प्रकार का शैथिल्य न आवे, इस विचार से हमने यह निश्चय किया है कि दस विद्वानों का एक समुदाय महाराजाधिराज से इस अन्याय का प्रतिकार करने का प्रयत्न करें।'' [10] (चतुर्दश उच्छ्वास) इस प्रसंग के जरिए हमारा ध्यान सन् 1942 के आस–पास की परिस्थितियों की ओर जाता है। दस आदमियों का समुदाय आधुनिक समय में सत्ताधारियों से मिलने वाले डेलीगेशन का रूप है।

सभा में महामाया का यह कहकर कि 'आर्य सभापति, मैं सभा को संबोधन करके दो–चार वाक्य बोलना चाहती हूँ।'' [11] एक पूरा भाषण दे डालना आधुनिक भारत में प्रजातंत का प्रभाव है। साथ ही बीसवीं सदी की चेतनानुप्राणित नारी का रूप भी झलकता है।

महामाया अपने भाषण में कहती है – 'प्रजा ने राजा की सृष्टि की है।'' [12] यह प्रजातंत्र का आधारभूत सिद्धांत है। ''तुम यदि किसी यवन कन्या से विवाह करो तो इस देश में भयंकर सामाजिक विद्रोह माना जाएगा।'' [13] भट्टिनी का बाणभट्ट से कहा गया यह कथन उस समय पनपती कांग्रेस और मुस्लिम लीग की सांप्रदायिकता की ओर संकेत करता है।

भट्टिनी जब बाण से कहती है ''तुम इस म्लेच्छ कही जाने वाली निर्दय जाति के चित्त में संवेदना का संचार कर सकते हो, ...।'' [14] तो प्रतीत होता है मानो यह कथन गांधीजी के हृदय परिवर्तन के सिद्धांत से प्रभावित हो।

स्पष्ट है कि ऐतिहासिकता, काल्पनिकता और तत्कालीन चेतना का बैलेंस बनाने में द्विवेदी जी पूर्णतया सफल हुए हैं। इस उपन्यास की यह सफलता है।

''कथा में द्विवेदी जी के दो ही उद्देश्य हो सके हैं – एक प्रसिद्ध बाणभट्ट की लेखन–शैली की विडंबना प्रस्तुत करना और दूसरा पाठकों को संस्कृत साहित्य विशेषतः बाणभट्ट के उज्ज्वल सौंदर्य बोध की समृद्ध अवगति देना।'' [15] यह उपन्यास इन दो उद्देश्यों को पूरा करने में पूरी तरह से सफल है।

उपन्यास पर आक्षेप किया जा सकता है कि – कथा अपूर्ण या अधूरी है। वस्तुत यह बाणभट्ट की आत्मकथा की कमजोरी नहीं बल्कि कौशल है। ऐसा कौशल जो बाणभट्ट की उस प्रसिद्ध साहित्यिक विडम्बना को स्पष्ट करता है कि बाणभट्ट की सभी रचनाएं अपूर्ण हैं। इसलिए द्विवेदी जी ने लिखा भी है – ''ध्यान देने की बात यह है कि बाणभट्ट की अन्यान्य पुस्तकों की भांति यह आत्मकथा भी अपूर्ण है।'' [16] हालांकि यह विवाद का विषय है कि क्या यह कथा सही मायने में अपूर्ण है।

बाणभट्ट की आत्मकथा' के सिलसिले में यह भी कहा जाता है कि इसके लेखक का ध्यान मुख्य रूप से कथा–रचना और वर्णनों पर ही केंद्रित रहा है। अतएव पात्रों के चरित्र–चित्रण की उपेक्षा हो गई है, चरित्रों की रेखाएं बहुत स्पष्ट नहीं हो सकी हैं। जो पात्र हमारे साथ सर्वाधिक समय रहते हैं, ''उन पात्रों को लेकर एक उदात्त भावना की झलमलाहट और करुण–कोमल रहस्यमयता की अस्पष्टता ही हमारे सामने बराबर बनी रहती है।'' [17] संभव है यह आक्षेप सही हो पर क्या यह कमजोरी सही मायने में द्विवेदी जी की है या बाणभट्ट के लेखन की ?

उपन्यास से एक बात तो पूरी तरह स्पष्ट है कि जो गुण बाणभट्ट की रचनाओं में मिलते हैं वही कमोबेश 'आत्मकथा' में भी मिलते हैं। जो दोष बाणभट्ट की शैली के हैं वही 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के भी। इस दृष्टि से द्विवेदी जी ''हिंदी के बाणभट्ट' हैं।'' [18]

उपन्यास का एक बड़ा दोष वर्णनों की अत्यधिक प्रचुरता का है, इससे प्रवाह में बाधा पड़ती है। जहां भी बाणभट्ट को अवसर प्राप्त हुआ वहीं ठहर कर वर्णन करना आरंभ कर देते। द्विवेदी जी ने भी ठीक यही किया है। द्विवेदी जी के कुछ वर्णन बाण की रचा 'कादम्बरी' से लिए गए हैं। द्विवेदी जी ने 'उपसंहार' में संकेत किया है कि – ''कादम्बरी' शैली के साथ इसकी शैली में ऊपर से बहुत साम्य दिखता है, आँखों का प्राधान्य इसमें भी अन्य इंद्रियों की अपेक्षा अधिक है – रूप का, रंग का, शोभा का, सौंदर्य का इसमें भी जमकर वर्णन किया गया है।'' [19] इसके अतिरिक्त लम्बे–लम्बे प्राकृतिक वर्णनों को देकर उन्होंने 'कादम्बरी' वाली शैली को भी अपनी औपन्यासिक विधा में समाविष्ट करने का प्रयास किया है।

परंपरा का पालन करते हुए आचार्य द्विवेदी ने आद्यायिका और कथा के शिल्प का भी उपयोग किया गया है। प्रारंभ में मंगलाचरण, कथामुख के समावेश के अतिरिक्त कथा का उच्छ्वासों में विभाजन हुआ है। साथ ही इसमें आख्यायिका के घटना–वैचित्र्य और संयोगों का भी आश्रय लिया गया है। उपन्यास की सफलता का एक कारण इसमें बाणभट्ट की शैली का अनुकरण भी है। लेखक ने काव्यात्मक शैली में तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के आभास के लिए राज–महल, अंतःपुर राजदरबार, राजमार्ग, हाट–बाजार, बौद्धविहार, तंत्र–मंत्र, संगीत–नृत्य आदि का वर्णन किया है।

'अशोक के फूल' में संग्रहीत निबंधों की स्वच्छंद शैली के दर्शन संपूर्ण उपन्यास में होते हैं, कहीं शैली अलंकार प्रधान हो गई है तो कहीं सरल सुबोध है कहीं संस्कृत निष्ठ शब्दों की भरमार है तो कहीं आम चलते हुए शब्दों का भी जमकर प्रयोग है। प्राचीन और नवीन का सुंदर सम्मिश्रण लेखक ने शैली की दृष्टि से भी किया है यह उनकी रचना–कौशल का द्योतक है। साथ ही द्विवेदी जी ने बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' और 'हर्षरचित' की तरह ही इस उपन्यास

में लंबे–लंबे समास युक्त वाक्यों का व्यवहार किया है। कई सूत्र वाक्यों का प्रयोग भी उपन्यास में लेखक ने किया है।

उपन्यास के अधिकांश पात्र संस्कृत निष्ठ भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा में छंदों, मुहावरों, समासों और लोकोक्तियों की बहुलता है। इसके अतिरिक्त वे कई अप्रचलित शब्दों का प्रयोग भी करते हैं। इन कारणों से इनकी भाषा पर दुरुहता और दुर्बोधता का आरोप लगाया जाता है। पर यह आरोप बिल्कुल निराधार है, इसके कई कारण हैं कि द्विवेदी जी को इस भाषा का प्रयोग करना पडा है।

एक कारण, कथा में विश्वसनीयता और तद्युगीन वातावरण की सजीवता की रक्षा के लिए उन्हें इस भाषा का प्रयोग करना पड़ा। यह इसलिए भी क्योंकि लेखक के सम्मुख 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' के सहारे पूरा–का–पूरा तद्युगीन परिवेश था। दूसरे इस भाषा के प्रयोग से द्विवेदी जी ने वर्तमान और अतीत के बीच एक सेतु का निर्माण करने में सफलता पाई है। इसी के सहारे आज के पाठक के लिए अतीत में प्रविष्ट होने का कार्य अपेक्षा कृत सरल हो गया है।

इसकी शैली और भाषा हमें अनायास ही बाणभट्ट के शैली और भाषा की याद दिलाती है। आधुनिक पाठक को इस कारण 'बाणभट्ट की आत्मकथा' जैसे सरस उपन्यास को भी हृदयागम करने के लिए कहीं–कहीं भाषा के व्यूह से गुजरता पडता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की गद्य–भाषा इसके कथ्य जैसी ही भव्य और उदात्त है, जो इस विशिष्ट कलात्मक अनुभव के लिए अपने प्रयोग की सार्थकता और अनिवार्यता का एहसास देती है। तत्कालीन राजनीतिक अवस्था, धार्मिक मत–मतांतर, सामाजिक, राजनीतिक आदि के चित्रण की दृष्टि से उपन्यास महत्वपूर्ण हैं। साथ–ही–साथ इसके देशकाल चित्रण में प्राचीन काव्य इतिहास ग्रंथों के गंभीर अध्ययन का कुशलता से उपयोग किया गया है।

अंततः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आचार्य हजार प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी उपन्यास की परंपरा को विशेष रूप से ऐतिहासिक उपन्यास की परंपरा को न केवल कथावस्तु की दृष्टि से, बल्कि भाषा–शैली और शिल्प की दृष्टि से भी एक नया मोड़ दिया है और अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा उसमें बहुत कुछ ऐसा जोड़ा है, जो पहले कहीं नहीं था।

संदर्भ

1. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सं. नरेन्द्र मोहन, पृ.112
2. हिंदी उपन्यास : यात्रा गाथा; शशि भूषण सिंहल, पृ.13
3. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, पृ.204
4. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.292
5. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, पृ.205
6. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.10
7. हिंदी–साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पृ.394
8. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, पृ.204
9. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, पृ.176
10. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.167
11. वही, पृ.197–98
12. वही, पृ.199
13. वही, पृ.69
14. ही, 271
15. प्रतिक्रियाएं, डॉ. देवराज, पृ.119
16. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.9
17. आधुनिक हिंदी उपन्यास, सं. नरेन्द्र मोहन, पृ.120
18. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.313–314
19. उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, त्रिभुवन सिंह, पृ.195